The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 4 | April 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

# प्राथमिक स्तर के बालक–बालिकाओं के संज्ञानात्मक विकास पर कथा–षिक्षण स्तर के प्रभाव का अध्ययन

**डॉ0 अजय कुमार प्रजापति**

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

**ARTICLE DETAILS**

**Research Paper**

**Keywords :**
*बालक, बालिकाएँ, वातावरण, षिक्षण–प्रक्रिया*

**ABSTRACT**

प्रस्तुत शोधकर्ता द्वारा इक्कीसवीं सदी के वैष्वीकरण और सार्वजनिककरण युग में संचार क्रांति के फलस्वरूप आए हुए बदलाव एवं अभिभावकों की सोच एवं उनकी महत्वकांक्षाएँ, बालक–बालिकाओं के संज्ञानात्मक विकास पर क्या प्रभाव डालती हैं, इसी के संदर्भ में अध्ययन किया गया है। अध्ययन के लिए जौनपुर जिला के विभिन्न ग्रामों के 50 विद्यालयों के 1000 बालक–बालिकाओं जिनकी आयु 5 से 7 वर्ष है, लिए गए है जिनमें 'पाण्डेय कग्निटिवी डेवलेपमेंट टेस्ट फॉर प्री स्कूलर्स' तथा स्वनिर्मित तथा षिक्षण प्रक्रिया मापनी का प्रयोग किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि बाललक–बालिकाओं की आयु में वृद्धि होने के साथ–साथ संज्ञानात्मक विकास में वृद्धि होती है तथा कथा–षिक्षण प्रक्रियाओं का प्रभाव भिन्न रूप से पड़ता है।

## प्रस्तावनाः–

बच्चे (बालक और बालिकाएँ) प्रकृति की अनमोल देन है, सबसे सुन्दर कृति है। वह सरल है, सहज है, सादी स्लेट की तरह निर्मल है, जिसपर कुछ भी लिखा जा सकता है। मानव जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में बाल्यकाल मानव जीवन की प्रारम्भिक अवस्था है, जिसमें मानव की समस्त शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं का विकास होता है।

संयुक्त राष्ट्र महासंघ ने वर्ष 1979 को अन्तर्राष्ट्रीय बाल 'वर्ष' घोषित किया था। राष्ट्रीय षिक्षा नीति 1986 मे पूर्व बाल्यकाल सुरक्षा एवं षिक्षा ( Early Childhood Care & Education) की ओर से विषेष ध्यान दिया गया तथा इस कार्यक्रम को महिला विकास एवं प्राथमिक षिक्षा सार्वभौमिकरण हेतु सहायक सेवा के रूप में प्राथमिकता दी गई। अतः प्राथमिक अवस्था में अवसर प्रदान करना आवष्यक है, जिससे बालक–बालिकाओं के संज्ञानात्मक विकास एवं क्षमताओं में निखार आ सकें। *"यदि आप चाहते हैं कि बालक सुन्दर वस्तुओं की प्रषंसा और निर्माण करते तो उसके चारों ओर सुन्दर वस्तुएँ प्रस्तुत कीजिए।"* षिक्षा आयोग (1964–1968) में स्पष्ट रूप से कहा गया है बच्चे` शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास की दृष्टि से प्रारंभिक 3–10 साल तक के वर्ष सार्वधिक महत्वपूर्ण होते है। यह भी माना गया है, जो बच्चे पूर्व प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन हेतु जाते है, वह प्राथमिक स्तर पर अच्छा प्रगति करते हैं। 1972 में स्वामीनाथन ने बच्चे के विकास हेतु कहा कि 0 से 3 वर्ष की आयु स्वास्थ्य तथा पोषण की दृष्टि से तथा 3 से 6 वर्ष की आयु समूह संज्ञानात्मक विकास की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण है।

वस्तुतः वर्तमान में बालक–बालिकाओं के महत्व को कुषलता पूर्वक समझना और उन्हें इस प्रकार तैयार करना कि न केवल राष्ट्र की नींव मजबूत हो अपितु उसके भविष्य का निर्माण करने में सहायक हो तो यह निष्चय हो जाता है कि बाल्यावस्था को प्रभावित करने वाले विभिन वातावरण जनित कारकों के संदर्भ में शोध करके, बालकों के संज्ञानात्मक विकास के संदर्भ में सही दषा का संज्ञान प्राप्त किया जाए। पुनः इक्कीसवीं सदी के वैष्वीकरण, सार्वजनिकरण के युग में संचार–क्रान्ति के फलस्वरूप आए हुए बदलाव एवं अभिभवकों की सोच, उसकी महात्वकांक्षाएँ बालकों के संज्ञानात्मक विकास पर क्या प्रभाव डालती हैं, इसें संदर्भ में शोधार्थी के सम्मुख कुछ प्रष्न प्रस्तुत हुए।

1. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है?
2. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास पर षिक्षण प्रक्रिया का क्या प्रभाव पड़ता है?

उक्त प्रष्नों के उत्तर प्राप्त करने की दृष्टि से ही इस शोध–समस्या का चयन किया गया।

**समस्या–कथन –**

प्राथमिक स्मर के बालक–बालिकाओं के संज्ञानात्मक विकास पर उसके कथा–षिक्षण के प्रभाव का अध्ययन करना।

**अध्ययन के उद्देष्य –**

1. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत बालक–बालिकाओं के संज्ञानात्म्क विकास पर कथा–षिक्षण प्रक्रिया के प्रभाव का अध्ययन।
2. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की आयु अनुसार उनके संज्ञानात्मक विकास पर उनके कथा षिक्षण–प्रक्रिया के प्रभाव का अध्ययन।
3. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत बालक–बालिकाओं के यौन भेद के अनुसार उनके संज्ञानात्मक विकास शैक्षणिक प्रक्रिया के प्रभाव का अध्ययन।
4. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत बालक–बालिकाओं की आयु व यौन भेद के अनुसार उनके संज्ञानात्मक विकास पर कथा–षिक्षण प्रक्रिया के प्रभाव का अध्ययन।

**अध्ययन की परिकल्पनाएँ –**

1. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत बालक–बालिकाओं का संज्ञानात्मक विकास कथा षिक्षण प्राकिया से प्रभावित नहीं होता है।
2. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विभिन्न आयु वर्ष के बालक–बालिकाओं के संज्ञानात्मक विकास कथा षिक्षण प्रक्रिया से प्रभावित नहीं रहता है।
3. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत बालक–बालिकओं के यौन भेद के अनुसार विद्यार्थियों का संज्ञानात्मक विकास तथा षिक्षण से प्रभावित नहीं होता है।
4. प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विभिन्न आयुवर्ग के बालक–बालिकाओं के संज्ञानात्मक विकास पर कथा षिक्षण प्रक्रिया का प्रभाव नहीं पड़ता है।

**अध्ययन का परिसीमांकन–**

1. अध्ययन में जौनपुर जिला के विभिन्न प्राथमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है जो किसी राज्य अथवा केन्द्रीय शैक्षिक बोर्ड, आईसीएसई षिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त की है।

2. शोध अध्ययन उन्हीं प्राथमिक स्तर के विद्यालयों तक सीमित रखा गया है जिनकी प्राथमिक कक्षाओं की शैक्षणिक वार्षिक शुल्क 2400 रू0 अथवा उससे कम है।
3. शोध अध्ययन प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत 5 से 7 वर्ष तक के आयु वर्ग के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया।

**अध्ययन विधि –**

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

**न्यादर्ष–**

प्राथमिक स्तर के 50 विद्यालयों के 1000 विद्यार्थियों का चयन करके उनके संज्ञानात्मक विकास के लिए किया गया तथा इन्हीं बालकों के अभिभावकों का चयन अभिभावाकीय आकांक्षा के अध्ययन हेतु किया गया।

**उपकरण–**

पाण्डेय (1993) द्वारा निर्मित परीक्षण कॉग्निटिव डेवलेपमेंट टेस्ट फॉर स्कूलर्स और स्वनिर्मित कथा षिक्षणा मापनी का प्रयोग किया गया।

**सांख्यिकीय प्रविधियाँ–**

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के विष्लेषण के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकीय विधियों में मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात का उपयोग किया गया है।

**प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण एवं विष्लेषण प्राथमिक स्तर के बालक–बालिकाओं की आयु व यौन–भेद संदर्भ में संज्ञानात्मक विकास का अध्ययन–**

विभिन्न आयु स्तर पर बालक एवं बालिकाएँ आपस में संज्ञानात्मक विकास में क्या प्र्याप्त अंतर रखते हैं, इसका तुलनात्मक अध्ययन किया गया। प्राप्त परिणामों को निम्न तालिका में प्रस्तुत किया गया।

तालिका सं0–01

**प्राथमिक स्तर के विभिन्न आयु वर्ष के बालक एवं बालिकाओं के संज्ञानात्मक विकास संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान प्रमाणिक विचलन, क्रान्तिक अनुपात तथा पी मान**

| आयु समूह | बालक | बलिकाएँ | क्रा0 | पी |
|---|---|---|---|---|

| (वर्ष) | संख्या | मध्यमान | प्रा0वि0 मान | संख्या | मध्यमान | प्रा0वि0 मान | अनुपात | मान |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 5–6 | 200 | 100.57 | 21.63 | 210 | 103.55 | 22.23 | 1.37 | 0.02 |
| 6–7 | 180 | 111.65 | 28.28 | 200 | 102.34 | 28.79 | 3.17 | 0. 009 |
| का0 अनुपात | 4.2615 | | | 0.4746 | | | | |
| | <0.01 | | | <0.01 | | | | |

उपर्युक्त तालिका का गहनपूर्वक अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि दोनों ही आयु वर्ग के अर्थात् 5–6 वर्ष एवं 6–7 के बालकों के संज्ञानात्मक विकास संबंधी प्राप्तांकों के माध्यमानों में अंतर सांख्यिकी दृष्टिकोण से 99 प्रतिषत व 99 प्रतिषत विष्वास स्तर पर सार्थक पाये गए है। इन परिणामों से यह स्पष्ट है कि प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों का संज्ञानात्मक विकास उसकी आयु तथा यौन भेद के अतः क्रिया से प्रभावित हो रहा है।

**प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में संचलित शैक्षिक प्रक्रिया के परिप्रेक्ष्य में अध्ययनरत विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास का अध्ययन–**

प्रत्येक विद्यालय की अपनी एक शैक्षिक प्रक्रिया होती है, जो विद्यार्थियों के प्रभावी अधिगम के लिए उत्तरदायी होती है। यह शैक्षिक प्रक्रिया बहुत विद्यालय षिक्षकों एवं प्रधानाचार्या द्वारा निर्धारित नीतियों तथा उनके शैक्षिक पृष्ठभूमि एवं उनके पभावी षिक्षण पर निर्भर करती है। षिक्षण पर निर्भर करती है। शैक्षिक प्रक्रिया, अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अथवा निष्पत्ति को तो अवष्य प्रभावित करती है, किन्तु षिक्षण की प्रक्रिया अध्ययनरत विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास को भी प्रभवी करती है? क्या इसका प्रभाव अध्ययनरत विद्यार्थियों की आयु तथा यौन भेद के परिसंदर्भ में भिन्न–भिन्न पड़ता है? इसके प्रभाव का अध्ययन इस प्रकार है–

**उच्च एवं निम्न प्रक्रिया वाले प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास का तुलनात्मक अध्ययन।**

अध्ययन में शैक्षिक परीक्षण पर चयनित प्रत्येक प्राथमिक विद्यालय के प्राप्तांक प्राप्त किए गए तथा प्राप्त प्राप्तांकों के वितरण की सहायता से प्रथम व तृतीय चतुर्थांष मान ज्ञात किए गए, जो क्रमषः 194.90 व 234.80 प्राप्त हुए। जिन विद्यालयों के शैक्षिक स्तर वाले विद्यालय के रूप में माना गया तथा जिन प्राथमिक विद्यालयों का प्राप्तांक तृतीय चतुर्थांष (235) से ऊपर थे, उन विद्यालयों को उच्च शैक्षिक स्तर के विद्यालय के रूप में माना गया।

तालिका सं0–02

**उच्च व निम्न शैक्षिक स्तर वाले प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास संबंधी के मध्यमान, प्रमाणित विचलन मान, टी मान व पी मान**

| शैक्षिक प्रक्रिया | विद्यार्थियों की संख्या | मध्यमान | प्र0वि0 मान | टी मान | पी मान |
|---|---|---|---|---|---|
| उच्च N=10 | 215 | 116.88 | 26.47 | 6.20 | <0.01 |
| उच्च N=8 | 210 | 100.50 | 27.86 | | |
| **योग** | **425** | | | | |

इस तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि दोनों समूहों के संज्ञानात्मक विकास संबंधी प्राप्तांकों के मध्यमानों में अंतर सांख्यिकी रूप से 90 प्रतिषत दषाओं में 423 स्वतंत्र के संदर्भ पायाा गया है।

**उच्च व निम्न शैक्षिक प्रक्रिया वाले प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का संज्ञानात्मक विकास का उसकी आयु के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन–**

पूर्व प्रस्तुत विष्लेषण से स्पष्ट है कि उन पूर्व प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में जो उच्च शैक्षिक प्रक्रिया को अपनाकर षिक्षण कार्य कर रहे है, उस विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों का संज्ञानात्मक विकास भी उच्च पाया गया है। फिर भी यहाँ पर प्रष्न उठता है कि क्या उच्च व निम्न शैक्षिक प्रकिया का प्रभाव विद्याार्थियों की मानसिक क्षमता पर उनके आयु स्तरानुसार भिन्न रूप से पड़ता है ? इस प्रष्न के उत्तर के लिए किया गया विष्लेषण एवं संबंधित प्राप्त परिणाम तालिका में दर्षाए गए है–

तालिका सं0–03

| उच्च व निम्न शैक्षिक स्तर वाले प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत 5–6 वर्ष आयु वर्ष के विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास प्राप्तांकों का मध्यमान विचलन टी मान, पी मान | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विद्यार्थियों का आयु वर्ग | उच्च शैक्षिक स्तर वाले पिद्यालयों में अध्ययनरत | | | निम्न शैक्षिक स्तर वाले विद्यालयों में अध्ययनरत | | | का0 अनुपात | पी मान |
| | संख्या | मध्यमान | प्र0वि0 मान | संख्या | मध्यमान | प्र0वि0 मान | | |
| 5.6 | 126 | 109.75 | 22.69 | 120 | 99.37 | 2696 | 3.26 | <0.01 |
| 67 | 86 | 123.32 | 29.42 | 96 | 104.1 | 29.27 | 4.408 | <0.01 |
| **योग** | **212** | | | **216** | | | | |

इस तालिका के अध्ययन से स्पष्ट हो रहा है कि दोनों समूहों के मध्यमानों में निहित अंतर सांख्यिकीय रूप में 997 से भी अधिक स्थितियों सार्थक पाया गया है।

**उच्च व निम्न शैक्षिक स्तर वाले विद्यार्थियों में अध्ययनरत बालक–बालिकाओं के संज्ञानात्मक विकास का तुलनात्मक अध्ययन–**

प्रस्तुत शोध के संदर्भ में यह ज्ञात करने के लिए कि क्या पूर्व प्राथमिक विद्यालयों में संचालित शैक्षिक प्रक्रिया का प्रभाव बालक तथा बालिकाओं के संज्ञानात्मक विकास पर भिन्न रूप से पड़ता है। इस संदर्भ में किए गए विष्लेषण से प्राप्त परिणामों को निम्न तालिका में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका सं0–04

| उच्च व निम्न शैक्षिक स्तर वाले प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत बालक–बालिकाओं के संज्ञानात्मक विकास सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणित विवलन, टी मान व पी मान | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| विद्यार्थी का शैक्षिक स्तर | बालक | | | बालिकाएँ | | | टी मान | पी मान |
| | संख्या | मध्यमान | प्र0वि0 | संख्या | मध्यमान | प्र0वि0 | | |

| | | | मान | | | मान | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उच्च | 115 | 118.98 | 26.64 | 105 | 113.46 | 25.85 | 1.5 | >0.05 |
| निम्न | 105 | 105 | 26.99 | 109 | 99.87 | 24.73 | 1.45 | >0.01 |
| योग | 220 | | | 214 | | | | |
| टी मान | 3.86 | | | 3.93 | | | | |
| पी मान | <0.01 | | | <0.01 | | | | |

तालिका सं0 04 का अध्ययन करने पर स्पष्ट हो रहा है कि उच्च शैक्षिक स्तर एवं निम्न शैक्षिक स्तर में अध्ययनरत बालक एवं बालिकाएँ संज्ञानात्मक विकास में समान पाए गए हैं। लेकिन मध्यमान की दृष्टि से बालक–बालिकाओं की तुलना संज्ञानात्मक विकास में उच्च है, किन्तु सांख्यिकीय दृष्टिकोण से बालक–बालिकाओं के संज्ञानात्मक विकास संबधी प्राप्तांकों के मध्यमानो में निहित अंतर 96 प्रतिषत दषाओं से भी अधिक स्थितियों में असार्थक है।

**उच्च एवं निम्न शैक्षिक स्तर वाले प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं के आयु के संदर्भ में संज्ञानात्म विकास का तुलनात्मक अध्ययन।**

तालिका सं0–05

**उच्च एवं निम्न शैक्षिक स्तर वाले प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत 5–6 वर्ष आयु वर्ग के बालक–बालिकाओं के संज्ञानात्मक विकास सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणित विवलन, टी मान व पी मान**

| विद्यार्थी का शैक्षिक स्तर | बालक | | | बालिकाएँ | | | टी मान | पी मान |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | संख्या | मध्यमान | प्र0वि0 मान | संख्या | मध्यमान | प्र0वि0 मान | | |
| उच्च | 60 | 106.76 | 22.07 | 70 | 106.70 | 22.82 | .015 | >0.05 |
| निम्न | 50 | 97.34 | 23.58 | 65 | 101.68 | 26.29 | .93 | >0.05 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| योग | 110 | 135 | | |
| टी मान | 2.15 | 1.18 | | |
| पी मान | <0.01 | <0.01 | | |

तालिका सं0 05 के अध्ययन के उपरांत स्पष्ट हो रहा है कि आयु वर्ग 5–6 वर्ग के बालक–बालिकाएँ उच्च शैक्षिक स्तर वाले विद्यालयों में अध्ययनरत बालक–बालिकाओं तथा निम्न शैक्षिक स्तर वाले विद्यालयों में अध्ययनरत बालक–बालिकाओं के संज्ञानात्मक विकास सबंधी प्राप्तांकों के मध्यमानों में निहित अंतर 96 दषाओं से अधिक स्थितियों में असार्थक पाया गया है। पुनः उक्त तालिक से यह बात भी स्पष्ट हो रहा है कि 5–6 वर्ष का बालक वर्ग का संज्ञानात्मक विकास विद्यालय द्वारा अपनाए गए शैक्षिक प्रक्रिया से अत्यधिक प्रमाणित हो रहा है। साथ ही दोनों समूहों के मध्यमानों में पाया गया अंतर 99 दषाओं से भी अधिक स्थितियों में सार्थक पाया गया। इसके विपरीत 6–7 वर्ष आयु वर्ग की बालिकाओं का संज्ञानात्मक विकास विद्यालय की शैक्षिक स्तर से अप्रभावित है क्योंकि दोनों प्रकार के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यालयों में निहित अंतर सांख्यिकी रूप से असार्थक पाया गया है।

तालिका सं0 06

**उच्च एवं निम्न शैक्षिक स्तर वाले पूर्व प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत 6–7 वर्ष आयु वर्ग के बालक–बालिकाओं के संज्ञानात्मक विकास सम्बन्धी प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणित विचलन, टी मान व पी मान**

| विद्यार्थी का शैक्षिक स्तर | बालक | | | बालिकाएँ | | | टी मान | पी मान |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | संख्या | मध्यमान | प्र0वि0 मान | संख्या | मध्यमान | प्र0वि0 मान | | |
| उच्च शैक्षिक | 115 | 118.98 | 26.64 | 105 | 113.46 | 25.85 | 1.56 | >0.05 |
| निम्न शैक्षिक | 105 | 105 | 26.99 | 109 | 99.87 | 24.73 | 1.45 | >0.01 |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| योग | 220 | 214 | | |
| टी मान | 3.86 | 3.93 | | |
| पी मान | <0.01 | | | |

तालिका सं0 06 का अध्ययन करने पर स्पष्ट हो रहा है कि आयु वर्ग 5–6 वर्ष की बालक–बालिकाएँ जो उच्च व निम्न शैक्षिक स्तर वाले विद्यालयों में अध्ययनरत हैं, उनके संज्ञानात्मक विकास में उन बालक–बालिकाओं की तुलना में उच्च है, जो निम्न शैक्षिक स्तर वाले विद्यालयों में अध्ययनरत है। स्पष्ट है कि आयु वर्ग 5–6 वर्ष के बालक बालिकाओं का संज्ञानात्मक विकास विद्यालयों द्वारा अपनाए गए शैक्षिक प्रक्रिया से अधिक प्रभावित हो रहा है।

## निष्कर्ष

प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास के अध्ययन में प्रयोग किए गए सामाजिक चरों यथा आयु, यौन भेद, कक्षा षिक्षण स्तर के परिसंदर्भो में तुलनात्मक अध्ययन करने पर पाया गया कि पूर्व प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास पर आयु व यौन भेद का कुछ प्रभाव पडता है। बालक तथा बालिका दोनों ही संवेगों में आयु का सार्थक प्रभाव परिलक्षित हुआ। आयु में बडे बालक तथा बालिकाएँ अर्थात 6–7 वर्ष आयु वर्ग के बालक–बालिकाएँ अपने से छोटी आयु अर्थात 5–6 वर्ष आयु के बालक–बालिकाओं की तुलना में संज्ञानात्मक विकास में उच्च पाए गए इसी प्रकार 5–6 वर्ष तथा 6–7 वर्ष आयु संवर्ग पर बालक–बालिकाओं के संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। अतः अध्ययन से संबधित परिकल्पना के प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों का संज्ञानात्मक विकास, आयु व यौन भेद में सम्मिलित प्रभाव से अप्रभावित रहता है। इसको 99 दषाओं में अस्वीकृत किया गया है। अतः कहा जा सकता है कि प्रत्येक आयु स्तर पर वह यौन भेद प्रभावी रहता है तथा दोनों ही संवर्गों तथा बालक–बालिकाओं की आयु में वृद्धि होने पर उसके संज्ञानात्मक विकास में भी वृद्धि होती है।

परिणामस्वरूप 99 प्रतिषत विष्वास के साथ कहा जा सकता है कि पूर्व प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों का संज्ञानात्मक विकास आयु के संदर्भ में अतिरिक्त विद्यालय के कथा–षिक्षण प्रक्रियाओं से भी महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित होता है।

**शैक्षिक निहितार्थ –**

प्राप्त परिणाम यह दर्षाता है कि प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक विकास में आयु तथा यौन भेद के संदर्भ में अंतर होने के साथ–साथ कक्षा षिक्षण स्तर का महत्वपूर्ण प्रभाव पडता है। इन प्रभावों को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि 5–7 वर्ष की आयु पर बालक–बालिकाओं के संज्ञानात्मक विकास को ध्यान में रखते हुए कथा में उच्च शैक्षिक अनुभव प्रदान करना चाहिए साथ ही साथ इस अवस्था में कथा षिक्षण विधियों के रूप में क्रिया प्रधान षिक्षण विधियों को अपनाना चाहिए। 5–6 वर्ष की अवस्था पर बालकों के संज्ञानात्मक विकास को विद्यालय का भौतिक पर्यावरण महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर रहा है जैसे खेल सामग्री साज–सज्जा खुला मैदान भवन स्वच्छता आदि पर विषेष ध्यान देने की आवष्यकता है।

अभिभावक को चाहिए कि जब वे अपने बच्चों को अध्ययन हेतु किसी विद्यालय में प्रवेष दिलाना चाहते है उस विद्यालय के संबध में पूर्ण जानकारी प्राप्त कर लेने के उपरांत ही विद्यालय में बच्चों को प्रवेष दिलाने का निर्णय ले।

विद्यालय संचालको को चाहिए कि वे अपने विद्यालय की भौतिक संरचना साफ–सफाई प्रफुल्लित वातावरण षिक्षको की शैक्षिक योग्यता कथा षिक्षण प्रक्रिया तथा विद्यालय की उचित शैक्षिक वातावरण को बनाए रखने का प्रयास करें।

राज्य सरकार का भी यह दायित्व बनता है कि वह प्रादेषिक स्तर पर उच्च वातावरण एवं अध्ययन अध्यापन से युक्त विद्यालयों की स्थापना करे क्योंकि बालक ही राष्ट्र निर्माता है। यदि बालकों का संज्ञानात्मक विकास उच्च होगा तो राष्ट्र की प्रगति एवं विकास भी उच्चतर होगा स्वाभाविक है। अतः उनके पोषण के लिए उच्च कोटि की शैक्षिक व्यवस्थाओं के लिए गंभीर प्रयास करना चाहिए।

यद्यपि वर्तमान समय में राज्य सरकार उच्च षिक्षा के उच्चीकरण पर विषेष ध्यान दे रही है, किन्तु प्राथमिक स्तर पर अधिक ध्यान देने की आवष्यकता है। तभी षिक्षा के क्षेत्र में हमारे प्रयास अधिक सफल होगे।

**संदर्भ ग्रंथ सूची –**

- बुच.एम.बी (सम्पादित) (1983 – 89) फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेषन (वॉल्यूम 1 व 2) नई दिल्ली
- कपिल एच.के. (1986) सांख्यिकी के मूल तत्व विनोद पुस्तक मंदिर आगरा
- कपिल एच.के. (1986) अनुसंधान विधियॉ (व्यवहार परक विज्ञान में) आगरा एच.पी. भार्गव बुक हाउस.
- कोली लक्ष्मी नारायण (2003) रिसर्च मैथडोलॉजी, आगरा वाई के पब्लिसर्स.
- Carret H.E. (1961). Statistics in Psychology and Education Bombay Allied Pacific Pvt. Ltd. P. 520.
- Charian U.I. Relationship between Parantal Aspiration and Academic Acheivement of Rhasa Children from Broken and Intace Familier Faculty of Education University of Transkei in Psycho Rep. June 74 (3pty) PP 835-40.
- Elizabeth R. Mare H.B. Alan M.S. & Jacqueline B 1999 Early Cognitive Development and Parental Education New York Jhon Wiley & Sons Ltd. P. 520.
- Best J.W. and James V. Kanh (2006) Resarch in Education Ninth Edition Published by Darling Kindersley (India) Pvt. Ltd. Lienses of Pearson Education in South Asia.
- Christopher Spera Kathyra R Wentzel & Holl C. Motto (2008) : A Study of the Parental Aspirations for their Childrens Educational Attainment in Relation to Ethnicity Pareatal Education Childrens Academic Performance and parental Perreptoas of the Society and Chimare of their Childrcns School Published Oaly on 29th July.
- Taylar Deborah E (2008) The influence of Climate an Student Achievement in elementary Schools Published Ed. PhD. Thesis The George Washington University in Dal 69 (2) August PP 466A.